उनकी आवश्यकताओं के बारे में सलाह करें

आपको यह स्वयं करने की जरुरत नहीं है । सलाह करना आपको दूसरों की मदद करने में आवश्यक सहायता प्रदान कर सकता है ।

परमेश्वर ने आपको आपके वार्ड या शाखा में एक व्यक्ति या परिवार को उनकी जरुरत अनुसार सेवा करने के लिये आंमत्रित किया है । आप कैसे जान सकते हैं कि उनकी आवश्यकताएँ क्या हैं ? सलाह करने का नियम, जिस पर गिरजा ध्यान क्रेन्द्रीत करता रहा, मुख्य है ।

किस बारे में हमे सलाह करनी चाहिए, यह चर्चा करने के पश्चात, हम देखेंगे :

1. स्वर्गीय पिता के साथ सलाह करना ।
2. नियुक्त किए गए व्यक्ति और परिवार के साथ सलाह करना।
3. अपने साथी के साथ सलाह करना ।
4. और अन्य लोगों के साथ सलाह करना जो इसी व्यक्ति या परिवार के लिये नियुक्त किये गए हैं ।

अपने मार्गदर्शकों के साथ भी सलाह करना आवश्यक है । भविष्य में *लियाहोना* में सेवकाई के नियम का एक लेख मार्गदर्शकों के साथ सलाह करना और साथ ही साथ उस प्रतिक्रिया में सेवकाई साक्षात्कार की भूमिका पर आधारित होगा ।

हमें किस बारे में सलाह करनी है

जरुरतों को समझना एक दूसरे की सेवकाई में आवश्यक है । लेकिन वो ज़रूरतें किस रुप में हो सकती हैं, और क्या हमें जरुरतों के अलावा कुछ और भी पता लगाना चाहिये ?

जरुरतें कई रूप में हो सकतीं हैं । जिनकी हम सेवा करते हैं शायद मानसिक, आर्थिक, शारीरिक, शिक्षात्मक इत्यादि चुनौतियों का समाना करते हों । कुछ जरुरतों की प्राथामिकता दूसरों से अधिक होती है । कुछ को मदद करने के लिये हम सुसज्जित होंगे, दूसरों के लिए हमे सहायता की ज़रूरत हो सकती है । पार्थिव आवश्यकतायों की पूर्ति के प्रति अपने प्रयास में, यह न भूलें कि हमारी बुलाहट सेवा करने में शामिल है दूसरों की मदद अनुबंध के रास्ते में आगे बढ़ाने की, पौरोहित्य धर्मविधियों के लिये विशेष उत्कृष्टता के लिए तैयारी करना और पाने की है ।

एक व्यक्ति या परिवार की जरुरतों के बारे में सलाह करने के अतिरिक्त, हमे उनके सार्मथ्य के बारे में सीखना चाहिए । किस में उन्हें मदद की आवश्क्ता नहीं है? उन में कौन सी योग्यता और उपहार है जिससे वे दूसरों को आशीषित कर सकते हैं ? किस अनोखी तरह से वे परमेश्वर के राज्य के निर्माण में सहायता प्रदान कर सकते हैं ? एक व्यक्ति के सामर्थ्य को समझना उतना ही ज़रूरी है जितना कि उनकी आवश्यकताओं को समझना है ।

स्वर्गीय पिता के साथ सलाह करना

हमारे विश्वास का एक मुख्य सिद्धांत यह है कि स्वर्गीय पिता अपने बच्चों से बात करते हैं (देखें विश्वास के अनुछेंद 1:9) । जब हम किसी एक की सेवा करने के लिये नए काम को प्राप्त

करते हैं, हमें प्रार्थना में स्वर्गीय पिता से सलाह करनी चाहिये, अंतर्दृष्टि से उनकी आवश्यकताओं और सामर्थ्य को ढूढ़ने और समझने के लिए । प्रार्थना के द्वारा यह सलाह करने की प्रतिक्रिया सेवकाई कार्य करने के दौरान निरंतर होनी चाहिये ।

व्यक्तियों और परिवारों के साथ सलाह करना

कैसे और कहां हमें व्यक्तियों और परिवारों से पूछना है हमें जिनकी सेवा करने को बुलाया गया है की परिस्थितियों पर निर्भर करता है, लेकिन उस व्यक्ति या परिवार से सीधे सलाह करना विशेष है संबंधों को बनाने और उनकी जरुतों को समझने के लिये, साथ में वे किस तराह सहायता चाहते हैं । कुछ प्रश्नों के लिए एक अर्थपूर्ण संबंध बनने तक का इन्तजार करना होता है । जबकि इसका कोई एक सही तरीका नहीं है, निम्नलिखित पर विचारें :

- पता करें कैसे और कब वे संपर्क चाहेंगे ।
- उनकी रुचि और अतीत के बारे में जानें ।
- सुझावों के साथ आएं के कैसे आप सहायता कर सकते हैं, और उनके सुझाव के लिये पूछें ।

जैसे हम भरोसा बनाते हैं, व्यक्तिगतया परिवार की जरुरतों के बारे में चर्चा करने का विचार करें । पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किये गएं प्रश्नों को पूछें । उदाहरण के लिएः

- कौन सी चुनौतियों का सामना वे करते हैं ?
- उनके पारिवारिक या व्यक्तिगत उदेश्य क्या हैं ? उदाहरण के लिये, क्या वे समय से फॅमिली होम इवनिंग रखने में बेहतर, या अधिक आत्म-निर्भर बनना चाहते हैं ?
- हम कैसे उनके उदेश्यों और चुनौतियों के लिए सहायता कर सकते हैं ?
- उनके जीवनों में सुसमाचार की कौनसी धर्मविधियां आ रहीं हैं ? हम कैसे उने की तैयारी करने में मदद कर सकते हैं ?

स्पष्ट सहायता का प्रस्ताव देना याद रख्खें, जैसे कि, "इस सप्ताह किस दिन हम आपके के लिये भोजन ला सकते हैं?" एक अस्पष्ट प्रस्ताव, जैसे, "यदि कोई मदद चाहिए तो बताइयेगा, " बहुत मददगार नहीं होता है ।

अपने साथी के साथ सलाह करना

क्योंकि आप और आपका साथी हमेशा एक-साथ न हों जब आप इस व्यक्ति या परिवार के साथ बातचीत करते हों, यह महत्वपूर्ण है कि एक दूसरे के के साथ सलाह करें जैसे आप साथ में प्रेरणा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं । यह कुछ प्रश्न हैं विचार करने के लिए :

- साथी के तौर पर आप एक दूसरे से कितनी बार और कैसे बातचीत करेंगे ?
- आप प्रत्येक अपनी व्यक्तिगत सामर्थ्य का कैसे प्रयोग कर सकते हैं इस परिवार और व्यक्ति की सेवा करने के लिए ?
- आपने क्या बातें सीखीं, क्या अनुभव किया, और क्या प्रेरणा प्राप्त कि है जब से आखरी बार आपने ने इस व्यक्ति या परिवार के बारे में बात की थी ?

अन्य नियुक्त लोगों के साथ सलाह करना

यह अच्छा होगा कि समय-समय पर दूसरों के साथ बात करें जो इसी व्यक्ति या परिवार की सेवा के लिये नियुक्त किए गए हैं जिसकी सेवा आप करते हैं ।

समस्याओं के समाधान के लिये बातचीत करें

एलडर ची होंग (सॅम) वोंग सत्तर के मरकुस 2 से एक छेंद को हमारे दिन को दर्शाते हुएं लागू करते है कैसे एक साथ चार लोगों ने सलाह कर संभव किया कैसे एक लकवा पीड़ित व्यक्ति को यीशु की उपस्थिति में लाने की ।

पीड़ित पुरुष के घर जाना| ... हाल ही में हुए वार्ड परिषद में, वार्ड में जरुरतमंदों के बारे में सलाह करने के पश्चात, धर्माध्यक्ष ने 'बचाने' का कार्य दिया । इन चारों को उस पुरुष की सहायता के लिये नियुक्त किया गया था । ...

" [जब वे उस ईमारत पर पहुंचे जहाँ यीशु थे,] कमरा बहुत ज्यादा भरा हुआ था । वे दरवाजे से अन्दर नहीं जा सकते थें । मुझे यकीन है कि उन्होंने वो सब-कुछ करने की कोशिश की होगी जो वे सोच सकते थे, परन्तु वे उसके द्वारा जा नहीं सकते थें।... उन्होंने एकसाथ आगे क्या करना है की सलाह की—कैसे वे उस पुरुष को यीशु मसीह के पास चंगाई के लिए ला सकते थे। ... उन्होंने एक योजना बनाई—आसान नहीं थी, परन्तु उन्होंने उस पर अमल किया ।

"...उन्होंने छत हटाई जहाँ वे थे : और जब वे उसे तोड़ चुके थे, उन्होंने बिस्तर निचे उतारा जिस पर लक्वा पीड़ित लेटा हुआ था' (मरकुस 2:4)। ...

"...'जब यीशु ने उनके विश्वास को देखा, उन्होंने लक्वा पीड़ित से कहा, पुत्र, तुम्हारे पाप माफ़ हुए' (मरकुस 2:5)." [2]

कार्य करने का निमंत्रण

एल्डर डिटर एफ. उख्डोर्फ़ बारह प्रेरितों की परिषद के अनुरोधकरते हैं, "एक साथ सलाह करें, सभी उपलब्ध साधनों का प्रयोग करें, पवित्र आत्मा की प्रेरणा को पाने का प्रयास करें, प्रभु से पुष्टिकरण के लिए निवेदन करें, और फिर अपनी कमर कसें और काम पर जायें ।

"मैं आप से एक वादा करता हूँ: यदि आप इस तरीके का पालन करेंगे, आप स्पष्ट दिशा निर्देश पाएंगे कि *किसे, क्या, कब*, और *कहाँ* प्रभु के अनुसार प्रदान किया जाए ।" [3]

"सेवकाई के नियम लेख का उद्देश्य हमे एक दुसरे का ध्यान रखना सिखने में सहायता करना है—सेवकाई दर्शन के समय सन्देश के रूप में देना नहीं । जैसे हम उनको जिनकी सेवा करते है जानने लगते हैं, पवित्र आत्मा हमें प्रेरणा देंगे जानने के लिए कि किस संदेश की उन्हें हमारे ध्यान रखने और करुणा के अतिरिक्त आवश्यकता होगी ।

सलाह करने की शक्ति

"यदि आप किसी चीज को सुधारना चाहते हैं, आप को उसके बारे में सलाह करनी होगी," अध्यक्ष एम. रसल बैलार्ड कहते हैं, बारह प्रेरितों की परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष । "जब हम [करते हैं], हम आत्मिक सहकारिता की रचना करते हैं जो मिलजुल कर करने या सहयोग के परिणाम स्वरुप प्रभावशीलता या उपलब्धि को बढ़ाता है,जिस का परिणाम महान है व्यक्तिगत भागों के मुल से" (in R. Scott Lloyd, "Counseling with Councils Is Lord's System, Elder Ballard Declares," Jan. 11, 2017,; " Strength in Counsel," *Ensign,* Nov. 1993, 77).

संबंध बनाना भी एक-साथ सलाह करने का एक महत्वपूर्ण भाग है । साथ में देखें सेवकाई के नियम का लेख "अर्थपूर्ण संबंध बनाना," अगस्त 2018 के *लियाहोना* पत्रिका में, पृष्ठ 6 पर ।

टिप्पणियाँ

1. See *Preach My Gospel: A Guide to Missionary Service* (2004), 183.
2. Chi Hong (Sam) Wong, "Rescue in Unity," *Liahona,* Nov. 2014, 14–15.
3. Dieter F. Uchtdorf, "Providing in the Lord's Way," *Liahona,* Nov. 2011, 55.

© 2018 by All rights reserved. Printed in USA. English approval: 6/17. Translation approval: 6/17. Translation of Ministering Principles, September 2018. Hindi. 15052 294